

## राष्ट्रोपनिषत्

## रचयिता

## स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः

(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता

महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

धर्मः सर्वास्ववस्थासु, वस्तुनोऽस्ति सुरक्षकम् । सौन्दर्यं सकलं तस्मिन्, निहितं किं न विद्यते ? ॥१६१॥

धर्म सभी अवस्थाओं में वस्तु की सुरक्षा करने वाला होता है। समस्त सौन्दर्य क्या उस धर्म में निहित नहीं है?

Dharma protect the thing in every state. Isn't all the beauty also then inherent/vested/contained in that dharma?

चित्रगुप्तं विना नैव, यमस्य यमता क्वचित् । व्यासस्यापि च विख्यातौ, श्रीगणेशः सहायकः ॥१६२॥

बिना चित्रगुप्त के यमराज की कहीं यमराजता नहीं है और वेदव्यास की विख्याति में श्रीगणेश जी महाराज सहायक हैं।

The Yama (king of Death) cannot rule without Chitragupta (writer of destiny) and Ganesh is the helper in Vedvyasa's fame (to make Vedvyasa famous).

चेदीशो बलितस्तुष्येत्, स्वबलिः किं न दीयताम् ?। मूकानां किं बलौ शौर्यं, स्वेषां दत्वा तु दृश्यताम् ॥१६३॥

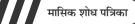
यदि ईश्वर बलिदान से सन्तुष्ट होता है तो अपनी बलि क्यों नहीं दी जाय ? बेचारे मूक जन्तुओं की बलि देने में क्या शूर-वीरता है ? जरा अपनों की बलि देकर तो देखो ।

If God is satisfied with a sacrifice, then why one does not sacrifice oneself? Where is the bravery in sacrificing voiceless animals? See for yourself by sacrificing yourself.

31

नवम्बर २०२३

## विश्व दीप दिव्य संदेश \_\_\_\_



छलं छद्म परित्यज्य, सद्भावः परस्परम् ।

यावन्नैव विधीयेत, तावच्छान्तिः सुखं न च ॥१६४॥

छल छद्म त्याग कर जब तक परस्पर सद्भाव स्थापित नहीं किया जाता, तब तक शान्ति और सुख भी नहीं मिलता हैं।

There will be no peace and happiness till cheating and pretenceare not renounced and harmony established.

जगत्प्रकाशकं वस्तु, केवलं चक्षुरिन्द्रियम् । समृद्धिरिप सम्पूर्णा, तच्छून्याय निरर्थिका ॥१६५॥

जगत् को प्रकाशित करने वाली वस्तु केवल नेत्रेन्द्रिय ही हैं। उस नेत्रेन्द्रिय से शून्य व्यक्ति के लिये तो सम्पूर्ण समृद्धि भी निरर्थक रहती है।

The things that give light to the world depend on the eyes. For the person without eyes all wealth become pointless.

जडमेव वरं वस्तु, युध्यते यद् मिथो निह । विचारी तु मनुष्योऽयं, संघर्षे हि सदा रतः ॥१६६॥

जड़ वस्तु ही अच्छी है जो आपस में लड़ती झगड़ती तो नहीं है। विचारधारी यह मनुष्य तो सदा संघर्ष करने में लगा रहता है।

Inert objects are good as they don't fight with each other. The human is always in some conflict because of thinking.

जनतां तोषयेद् यो न, किं स विन्देद् यशः श्रियम् ? । श्रीयुतोऽपि यशोहीनो, भस्त्रावत् स जीवति ॥१६७॥

जो जनता को सन्तुष्ट नहीं करे, क्या वह यश-श्री को प्राप्त कर सकता है ? श्री – सम्पन्न भी वह यश से शून्य बना हुआ धौंकनी की भाँति ही जीता है।

Can the one who does not satisfy people achieve fame and money? But money acquired without fame is (empty) like a bellow.

\*\*\*